BPSC: 134

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध : एक परिचय

परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न

With PDF'S

Scholarly Minds

1. अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन में यथार्थवादी दृष्टिकोण का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर:
यथार्थवादी दृष्टिकोण, जिसे 'रियलिज़म' भी कहा जाता है, अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शक्ति और संघर्ष को केंद्रीय स्थान देता है। यह सिद्धांत मानता है कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में कोई नैतिकता या उच्च उद्देश्य नहीं होता। हर देश अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए कार्य करता है, और इन हितों को प्राथमिकता दी जाती है। यथार्थवाद का मानना है कि मनुष्यों और देशों के बीच संघर्ष स्वाभाविक है, और देशों को अपनी सुरक्षा के लिए सैन्य शक्ति पर निर्भर रहना पड़ता है।

यथार्थवादी दृष्टिकोण में विशेषत: निम्नलिखित बातें शामिल हैं:

1. **राज्य (State) को प्राथमिक इकाई मानना:** यथार्थवाद में राज्य ही अंतरराष्ट्रीय राजनीति का मुख्य खिलाड़ी है। राज्य अपने राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाने के लिए किसी भी कार्रवाई में संलग्न हो सकता है।
2. **सैन्य शक्ति का महत्व:** यथार्थवादी सिद्धांत के अनुसार, देशों के बीच शक्ति का संतुलन और सैन्य ताकत सर्वोपरि है।
3. **सुरक्षा और अस्तित्व की चिंता:** प्रत्येक राष्ट्र की प्राथमिक चिंता अपनी सुरक्षा और अस्तित्व की रक्षा करना होती है।
4. **अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका पर संदेह:** यथार्थवादी दृष्टिकोण के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं केवल सहयोग के साधन होती हैं, लेकिन ये कभी भी राष्ट्रों के बीच संघर्ष को पूरी तरह से समाप्त नहीं कर सकतीं।

यथार्थवाद की आलोचना यह है कि यह दृष्टिकोण दुनिया को अत्यधिक नकारात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। यह मानवाधिकारों और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को नजरअंदाज करता है और यह मानता है कि राज्य हमेशा एक दूसरे के खिलाफ होते हैं।

2. ग्रीन पॉलिटिक्स क्या है ? चर्चाकीजिए।

उत्तर:
ग्रीन पॉलिटिक्स या "हरित राजनीति" (Green Politics) एक विचारधारा है जो पर्यावरणीय संकटों का समाधान करने के लिए नई और सतत् दृष्टिकोणों पर आधारित है। यह मुख्य रूप से उन मुद्दों पर ध्यान

केंद्रित करती है जो पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों, जैव विविधता, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और स्थायी विकास से संबंधित होते हैं। ग्रीन पॉलिटिक्स में यह विचार किया जाता है कि प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन और प्रदूषण हमारे पर्यावरण और मानव जीवन के लिए खतरे का कारण बन रहा है।

ग्रीन पॉलिटिक्स की प्रमुख विशेषताएँ:

1. **पर्यावरणीय न्याय:** यह विचारधारा गरीब देशों और समुदायों के अधिकारों की रक्षा करने के साथ-साथ, प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम और निष्पक्ष उपयोग करने पर जोर देती है।
2. **स्थायी विकास:** यह सिद्धांत मानता है कि विकास और पर्यावरण की रक्षा के बीच संतुलन स्थापित करना चाहिए।
3. **पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण:** ग्रीन पॉलिटिक्स यह मानता है कि प्राकृतिक संसाधनों का पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण करना आवश्यक है।
4. **जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण के खिलाफ संघर्ष:** यह विचारधारा वैश्विक जलवायु परिवर्तन को गंभीर समस्या मानती है और इसे रोकने के लिए मजबूत कार्रवाई की मांग करती है।
5. **जनता की भागीदारी:** ग्रीन पॉलिटिक्स लोकतंत्र और नागरिकों की सक्रिय भागीदारी की जरूरत को महसूस करती है, ताकि वे अपने समाज को पर्यावरणीय दृष्टिकोण से बेहतर बना सकें।

आलोचक इसे यह कहते हुए आलोचना करते हैं कि ग्रीन पॉलिटिक्स कभी-कभी अत्यधिक आदर्शवादी होती है और व्यावहारिक समाधान प्रदान नहीं कर पाती। फिर भी, यह पर्यावरणीय मुद्दों को मुख्यधारा में लाने और वैश्विक नीति में इन मुद्दों को शामिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

3. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार की आवश्यकता पर चर्चा कीजिए।

उत्तर:
संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय निर्णय लेने वाले अंगों में से एक है, लेकिन इसे लेकर कई आलोचनाएँ हैं, और सुधार की आवश्यकता पर बहस लगातार जारी रहती है। सुरक्षा परिषद के पास विश्व शांति और सुरक्षा बनाए रखने की जिम्मेदारी है, लेकिन इसकी संरचना में कई खामियां हैं।

1. **वर्तमान संरचना और वीटो पावर:**
   सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्य (अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, और चीन) के पास वीटो पावर है, जिसका मतलब है कि इन देशों में से कोई भी एक देश किसी भी प्रस्ताव को नकार सकता है। इससे कई बार प्रस्तावों की मंजूरी में अड़चनें आती हैं, और छोटे देशों के हितों को नजरअंदाज किया जाता है।
2. **विकसित और विकासशील देशों का असंतुलित प्रतिनिधित्व:**
   वर्तमान में सुरक्षा परिषद में सिर्फ पांच स्थायी सदस्य हैं, जबकि विश्व के अधिकांश देशों का प्रतिनिधित्व नहीं होता है। भारत, जर्मनी, ब्राजील, और अफ्रीकी देशों के जैसे प्रभावशाली देशों का प्रतिनिधित्व सुरक्षा परिषद में नहीं है, जबकि उनका अंतरराष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण योगदान है।
3. **संरचनात्मक सुधार की आवश्यकता:**
   कई विशेषज्ञ और देशों का मानना है कि सुरक्षा परिषद में सुधार आवश्यक है, ताकि यह ज्यादा लोकतांत्रिक और प्रतिनिधिक हो। इसका मतलब हो सकता है स्थायी सदस्य देशों की संख्या बढ़ाना और वीटो पावर में बदलाव लाना।

Scholarly Minds

4. **आधुनिक वैश्विक समस्याएँ:**
   आधुनिक समय में आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, मानवाधिकार उल्लंघन जैसी नई और गंभीर समस्याएँ उभरी हैं, जिनका समाधान केवल पारंपरिक सुरक्षा परिषद के ढांचे से नहीं किया जा सकता। नए मुद्दों पर अधिक प्रभावी निर्णय लेने के लिए सुधार की जरूरत है।

संक्षेप में, सुरक्षा परिषद का सुधार इसकी वैश्विक प्रासंगिकता बढ़ा सकता है और अधिक देशों को अपनी आवाज उठाने का मौका मिल सकता है। यह सुधार, खासकर विकसित और विकासशील देशों के बीच बेहतर संतुलन बनाने में मदद कर सकता है।

4. अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन में उदारवादी सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:
उदारवादी सिद्धांत (Liberalism) अंतरराष्ट्रीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जो विश्वास करता है कि विश्व में सहयोग और शांति संभव है। यह सिद्धांत यथार्थवाद से विपरीत है, क्योंकि यथार्थवाद में देशों के बीच संघर्ष और शक्ति का संतुलन मुख्य विषय होता है, जबकि उदारवाद में विचार किया जाता है कि राष्ट्र आपसी हितों के आधार पर सहयोग कर सकते हैं।

उदारवादी सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएँ:

1. **सहयोग और अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ:**
   उदारवाद यह मानता है कि अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ (जैसे संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन) देशों के बीच सहयोग बढ़ाने और शांति बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह संस्थाएँ नियमों और समझौतों के माध्यम से देशों के बीच रिश्तों को सुचारू बनाए रखती हैं।
2. **वाणिज्य और आर्थिक सहयोग:**
   उदारवादी सिद्धांत मानता है कि देशों के बीच आर्थिक सहयोग और व्यापार बढ़ाने से शांति सुनिश्चित होती है। यदि देशों के बीच मजबूत आर्थिक रिश्ते होते हैं, तो वे युद्ध और संघर्ष से बचने की कोशिश करेंगे क्योंकि युद्ध से आर्थिक नुकसान होता है।
3. **मानवाधिकार और लोकतंत्र:**
   उदारवाद यह मानता है कि लोकतांत्रिक देशों के बीच युद्ध का खतरा कम होता है और मानवाधिकारों का सम्मान बढ़ता है। यह विचारशीलता और बहस के आधार पर निर्णय लेने की प्रक्रिया पर जोर देता है।
4. **समझौतों और कूटनीति:**
   उदारवादी सिद्धांत कूटनीति और संवाद के जरिए देशों के बीच मुद्दों का समाधान खोजने पर विश्वास करता है। यह मानता है कि संघर्ष से बचने के लिए बातचीत और समझौते सबसे प्रभावी उपाय हैं।

आलोचक यह मानते हैं कि उदारवादी सिद्धांत कभी-कभी वास्तविकता से हटा हुआ होता है, क्योंकि देशों के बीच संप्रभुता और स्वार्थी राजनीति को नजरअंदाज करना कठिन हो सकता है। फिर भी, यह सिद्धांत वैश्विक सहयोग, शांति और मानवाधिकारों के संरक्षण की दिशा में एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

Scholarly Minds